

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५५

२२३(२२३)

ग्रंथ नाम

काव्ये.

सीतास्वयंवर, शिवरीचरित्र.

विषय

मराठी काव्य.

॥ ससिखशिखिसमचिबरे ॥ रणनि
 ॥ पुष्पसुघडरिपुपडतिदुधडचुणध
 ॥ रितिउघडमगरदनिकेरं ॥ सुरव
 ॥ दतिविजयनरत्नणतिअमयमुनि
 ॥ नटतिनिलयतटेनिजगजंरं ॥ ३० ॥
 ॥ श्लोक ॥ नेलाराक्षसभारसर्वविल
 ॥ यासंपूणीपिलि ॥ जालिसिद्धि
 ॥ समस्तहउ ॥ नदिकप्रकी
 ॥ या ॥ विचा ॥ ऋषिप्रमुखते
 ॥ सारेसगामं ॥ रामस्तविति
 ॥ पराक्रमअसा ॥ नअरवंडवं ॥ ३१ ॥
 ॥ बोधाशस्त्रशरास्त्रमंडितमहायो
 ॥ द्वाअयाध्यापती ॥ श्रद्धावुप्रभुय
 ॥ क्षवेदविबुधीवृधासहासपती ॥ व
 ॥ क्षामोचकतुंचिसाचस्मणुनिबद्धांजु
 ॥ क्षिराघवा ॥ सिद्धार्थिदिजसंघवाणि
 ॥ तउठसिद्धाश्रमीआघवा ॥ ३२ ॥

॥ गाधेय गजतेव देरधुरामचंद्रा ॥ जा
 ॥ लेक्ततार्थबहुचित्तचकोरचंद्रा ॥ ने
 ॥ लातुवांविहितयज्ञसमग्रसिद्धी ॥
 ॥ सिद्धाश्चमासिंतरिआजिकरिप्रसि
 ॥ धी ॥ ३३ ॥ जिजीह्मणे रघुकुळे श्वर
 ॥ आणकांही ॥ अज्ञापि जेदोमैनयेक्ष
 ॥ णिआणकांही ॥ निहंकार्यकथी
 ॥ जेतवर्कव ॥ जेतजीमगअ
 ॥ साल्ववेश ॥ ३४ ॥ ऐकोनिहेनि
 ॥ जमुजिरुहि ॥ जोजी ॥ ओळंगितिह
 ॥ दईबाणधु ॥ ३५ ॥ कल्याणहोप
 ॥ रममंगळहोळपाळा ॥ होसर्वशोभ
 ॥ नस्नेषे द्विजलोकपाळा ॥ ३६ ॥ सारे
 ॥ सारुनिनित्यकर्मकरुनीं देवाचने
 ॥ भोजने ॥ देतिहारतुरे विडे मगउरीधु
 ॥ पादिदिव्यासेने ॥ संपुष्टायतलोचनि
 ॥ शशिमुखिया ब्राह्मणे वायका ॥ आ

(2A)

॥ नंदे मग आरति करितिया रामारमा
॥ नायका ॥ ३६ ॥ आतां पुढिल रचनाप
॥ रिसाकसीते ॥ भंगो निच्या परधुरा
॥ जवरिल सीते ॥ निदीषे हे करिल राम
॥ कथामनाते ॥ आनंदनंदन कविविन
॥ बीजनाते ॥ ३७ ॥ श्री गुरु संरक्ष
॥ ण समाप्त ॥ रापे वामस्त ॥ ३८ ॥
॥ श्री राम जय ॥ जय राम ॥ ३९ ॥
॥ ३९ ॥ ॥ ३९ ॥



१३ (८) : ॥ श्रीसितास्वयंवरप्रारम्भ ॥

॥ श्रीरामचंद्राय नमः ॥ चिद्गोप्यं अथि
॥ लाविदेहमिथिळाभुपाळं भूपावळी ॥
॥ पाचारुनिविचारमानुनिकथिसाचा
॥ रवाचावळी ॥ जोहं त्रिंबकचापभूपठ
॥ चलि त्याआपुलिकंन्यका ॥ केलिअ
॥ पित्तहोसमर्पकवराहोनावराजीनि
॥ का ॥ ॥ हो ॥ नैकसकामसक
॥ चक्षोणि ॥ जैसेदेवमेहं
॥ मंडितसक ॥ रमातले ॥ येनेया
॥ जनकेसु ॥ केशुंगाररंगाग
॥ एणी ॥ केलोकेवळकौतुकेमगसभा
॥ व्यापेनृपाच्यागणी ॥ २ ॥ चुरिणीका ॥
॥ जैसेसकळकुळाचळमिळालेये
॥ केरुद्धळी ॥ कींलक्षावधिपल्ववा
॥ रानिधीजळी ॥ कींनानाविमानसं
॥ घगगनमंडळी ॥ कींकामरूपनगभा
॥ रपाताळी ॥ कींनानाफळसमुहकन्य

॥ वृक्षडाहळी ॥ तेविंमुकुटांगदकेयु
 ॥ रकिरीटंकटकमुक्ताहारतोडरनु
 ॥ पुरहंसकादिमूशणी ॥ विजमान रा
 ॥ मूपाळजनकसभामंडळी ॥ सकळ
 ॥ हीरोकवटले ॥ १ ॥ श्लोक ॥ राजेअंग
 ॥ कलिंगचंगमहिचेकास्मिरकर्णा
 ॥ टकी ॥ गौडि ॥ जेरोपमसभ
 ॥ आलेपलेन ॥ आधामिक
 ॥ शैवकासुक ॥ नारायणारंग
 ॥ एणी ॥ अशा ॥ मुशसेवक
 ॥ गणीतेआणिलेंआगणी ॥ ३ ॥
 ॥ पुर्विप्रागविदत्तजेबहुभरंभारिधरि
 ॥ मांदुसें ॥ होतेंअर्चितंधूपदिपकुसु
 ॥ मीजेइंद्रच्यापारुषे ॥ जेसाताशक
 ॥ टीमहाबळकटीवाहुनिबाहुबळे ॥
 ॥ चालिचालविलेंसभेसिसकळिजे

॥ वृक्षडाहळी ॥ सां बहि गाने जिजको दंडा ॥ दिखले जे

॥ शैलशृंगागळे ॥ ४ ॥ मत्तममूलहय
 ॥ बैलहले धनुष्या ॥ लावो निवोटिति
 ॥ बळे नेटुळे मनुष्या ॥ गाड्यासिया
 ॥ सिटु बांधुनि चारि नाडे ॥ आक
 ॥ षिति धरुनि हर्ष स्नानि नाडे ॥ ५ ॥
 ॥ गाडावोटिनि वीपवापस्यणुनि ते च्या
 ॥ पसापापरी ॥ ॥ तनुपालदंडुत
 ॥ रिले मपात ॥ राजदेखुनि द
 ॥ गभंगतिम ॥ नेत्री कसी ॥ हो
 ॥ तेल भ्यसणे ॥ भयवति राजाव
 ॥ व्हाते कसी ॥ ॥ ॥ साद्रिवरि हेमनिमि
 ॥ तजशासंफुल्लवल्लि मल्या ॥ तस्या आ
 ॥ मरणि आपारतरुणी सौधांगणि
 ॥ शो मल्या ॥ मध्ये कल्पकवल्लुरि स
 ॥ मदिसे सीता सुबिंबानना ॥ सीता सी
 ॥ लवति शुभानृपसभालक्षि जनाका
 ॥ नना ॥ ७ ॥ वार्तावार्तिक किति ती प्रभु

(4A)

॥ पुढें जी जी धराधीश्वरा ॥ आले गाधि
॥ नृपाळ नंदन पुरा संगें रुषिचा फरा ॥
॥ हें आकर्णित पूर्ण पुर्ण विभवे शानाणी
॥ वेक्षापती ॥ चाले सन्मुख सप्रधान अ
॥ वधे मागे पुढें धांवती ॥ ८ ॥ राजराज्या
॥ सहित उठला चालतिलोकराजी ॥ रा
॥ जीवांक्षासदि नो देखिला सत्व
॥ राजी ॥ राजी यह दये देखि
॥ लें रामचंद्रा ॥ हें जळने धिफु
॥ गेते स्थिति रा ॥ १९ ॥ रथेंदुर्निद
॥ खिल्या रुषि ध्यानाया जया च्याजटा ॥
॥ शटिबंधन वल्कला जिन कटि त्या पादुका
॥ बाजटा ॥ शुद्धाक्ष स्फुटिकाक्ष हार डुल
॥ तिसुति प्रभा बोलती ॥ सोरे चित्र सहाग्नि
॥ होत्र सुलति आनंदले चालती ॥ १० ॥ चु
॥ णीका ॥ ऐसिया रुषिराज मासारी ॥ विरा
॥ जमान विद्वज्जन सार्वभौम विमलान्तःकर

॥ एविश्वविरव्यातमहानुभावसिद्धाश्च
॥ मविहारी ॥ जो महातपाचाते जो रासी ॥
॥ परंतु उदय अस्तुवेगळा ॥ अल्हाद
॥ कारककळानिधिपरंतु न्युन्यक्षया
॥ विरहितनित्यागळा ॥ शृष्टिकर्ताच
॥ तुराननु परंतु निजदहितागमनदो
॥ षासिनिराळा ॥ अंतसमर्थशतय
॥ सुपरिज्ञात ॥ रपातकविटा
॥ आळा ॥ आसो ॥ वाग्मिनुपरममि
॥ अमुक्ततराम ॥ वरमहो ॥ २ ॥ छंद ॥
॥ वविलोकनविला ॥ साधर्मादिसद्गुणो
॥ करजनकें ॥ विदेहदेशाधिपंजनकें
॥ देखोनिदंडवत्साष्टांगीवंदिला ॥ १ ॥
॥ श्लोक ॥ बारोहोविजईस्त्रणेमगमुनी
॥ सारेधरेहोधणी ॥ थारेभूपतुदांत
॥ दंघ्रीमजनीतारे शवंशाग्रणी ॥ मोळा
॥ वेदविधीतजामगतशास्त्राविधीपू

(5A)

॥जिला॥सोळाशंकरसाचलास्तणुनियां
॥डोळारवणेयोजिला॥११॥ज्याच्यारुपे
॥निरसतिसकळाघरासी॥येतांचितो
॥अतिविलासकळाघरासी॥मूपाळ
॥सर्वदिउमेनमनें करीती॥आनेंदले
॥स्तवितिलोकजुनेकरिती॥१२॥अ
॥युद्धाममलेमने॥श्रितिपतीरायेप
॥णिगोविला॥दरिलेसमेब
॥सविलेजेठे॥॥शानेंपूण
॥अगाधगा॥॥वेधाजसाबेस
॥ला॥पावतो॥॥दादनटलाप
॥आसनीपेसल॥१३॥जोकल्याण
॥गुणीगुणिचअगुणीमूतेमणीज्यागु
॥णी॥ज्याच्यारुपगुणीसदांगुणगुणी
॥शंभुरिघेनिर्गुणी॥श्रुष्टिचीतगणीज
॥यास्तवगणीमायाजयाठेंगणी॥तो
॥कोणहानगणिबसेरुषिगणीश्रीराम
॥रंगंगणी॥१४॥जोवाहेधरणिप्रपंच

॥ भगवत्पदार्थवाच्यं धोरणी ॥ देवाचिकरणी ॥
 ॥ प्रतिप्रकरणी लुब्धजगत्कारणी ॥ जोकां
 ॥ आदिफलिविशेषणफणी रत्नं जयाच्या
 ॥ फणी ॥ तो रामानुज रामचंद्र निकटी शा
 ॥ भेसभारंगणी ॥ १५ ॥ सवार्द ॥ यापरिचे
 ॥ भवतापविमोचनच्या पशारांकितप्रव्यम
 ॥ ती ॥ पाहुनि स्नानाहुनि उत्तमत्ताहुनि
 ॥ तो शांनुस ॥ एवमुत्तमहिपा
 ॥ चक्रवाच ॥ वाचकसे सुक्ता ॥
 ॥ सांगमत्ता ॥ गमनाशयचांगम
 ॥ नासीमुत्ता ॥ हां सोनियां
 ॥ नृपसंभे मुनिराजबाल ॥ स्वानंदसं
 ॥ प्रमभरं हृदयांत डोले ॥ हां जि नृपा
 ॥ बहुत भाग्यजंगी उदेलें ॥ याच्या गु
 ॥ एंडुरित दैन्यसमग्र गेलें ॥ १५ ॥ सा
 ॥ केताधिप वाच हेरणात ठिरक्षोग
 ॥ एकाकाळे ॥ दिनाचैक एकाकाळे प्रति

॥१५॥ जेदा संकरोरुकार्यो॥ मुनि मुंमं०

(6A)

॥ पंदीरायाजगसाळहे ॥ पुत्तैदशुरल
॥ क्षणिरतसदांधामिकसंरक्षणी ॥
॥ आनंदाब्धिजनुक्षणिभरतरेया
॥ च्याक्कपाइक्षणी ॥ १८ ॥ येहिंदुः सह
॥ ताटिकानिवटिलीनिष्कंटकामेदि
॥ नी ॥ केलीकाननियाचियाशरत
॥ तीपाताळमने ॥ तीमारिचन
॥ मीसुमार ॥ सुबाहुपुरा ॥
॥ नेला ॥ मदि ॥ प्रवरहआले
॥ तुस्याहिपुरा ॥ पापानृपाआ
॥ णिमहोसवात ॥ आलिपाहायाब
॥ कवेषवाते ॥ मार्गेअहिल्याविपि
॥ नातरामे ॥ केलिसिळामुक्तमनोभि
॥ रामे ॥ २० ॥ परिसुनिमनरायारात
॥ लेरामपाई ॥ स्नपातमनीकराबासो
॥ यराहाउपाई ॥ कठिणातरिपणाचा
॥ व्यर्थसंकल्पकेला ॥ रघुवरनवराहा

॥ धन्ययाकन्यकेला ॥ २२ ॥ चुणिका ॥
 ॥ तोतें थें मरकतरचितमणिगणरवचि
 ॥ तस्तंभजुंमसौधमालीकामंदिरग
 ॥ वाक्षद्वारी ॥ बेसलिसहस्रसरखा
 ॥ माक्षारी ॥ विदेहराजकुमारी ॥ परम
 ॥ सकुमारी ॥ रामनगंगाप्रवाहविम
 ॥ लसरवतर ॥ संचरिकसं
 ॥ चयचंचल ॥ वंजनामंजुतरां
 ॥ जनाचेत्त ॥ सर्वेतिमवरव
 ॥ रणाविदित ॥ सकळरूप
 ॥ कुळाते आपुलचाट्टिपथाओ
 ॥ एतिजालीज्याएकी ॥ ३ ॥ श्लोक ॥
 ॥ पुपातें निरखिदिठीनिजसरवीसं
 ॥ घीरंमसारिखी ॥ शोभतेचिठखि
 ॥ विखीशशीमूरवीमाडिवरापारखी ॥
 ॥ जालीबुद्धिफिकिनुपाकृतिनिविमा
 ॥ निचनाकानकी ॥ रक्षीराघवकोतुकी

(7A)

॥ मगतु किमाथामनी ज्यानकी ॥ २३ ॥ को जतु
॥ जो शौकाब्धितरि नतां सिउतरित
॥ सादपनीतरी ॥ क्रिडेमी फ्रमरी ॥
॥ एणो निआम रिमानी नैतें पामरी ॥
॥ कैसें सज्ज करि धनुस उकरी ॥ हे
॥ फार चिंता करी ॥ मातें के विं वरी ॥
॥ एणो निवि वरी मासे ॥ गो वरी ॥ २३ ॥
॥ हावरी मुअउ ॥ ता ॥ आव
॥ रिन करि लार ॥ बाव विमति
॥ कसि स्थिर राडे ॥ रि संध विमा
॥ तघ राहे ॥ २४ ॥ चपु रात पावि सीतुं बो
॥ लसिका यसीते ॥ वरि एण हण सिरामा
॥ मात हे काय सीते ॥ बहुत दिवस बा
॥ पें ने मिले यापणांतें ॥ रंधु पति पति हो
॥ तो नो कसा आपणांतें ॥ २५ ॥ ऐसि ते
॥ बदतां वधु मग पुटुं कैसी कथा वत्तली ॥
॥ जैसी चंड मरु ध्वरे वन तति ते सीतसा

॥ नर्तली ॥ शंकाहीन मेदे सहोदतमहा
 ॥ हुंकार ज्याचा मेल ॥ उंकादुदुमिवा
 ॥ जवीतचिसंमेलंकापतिपातला ॥ रई ॥
 ॥ चेष्टिलावटजसाविटपानी ॥ येथु
 ॥ जिंनिबिउतोविटपानिं ॥ दंष्ट्रमं
 ॥ उततया मुरवराजी ॥ राजतीमद
 ॥ मरं मुरवराजी ॥ मवाई ॥
 ॥ देसधुरं ॥ शकंधरजेन
 ॥ पगंधर ॥ नसाहे मस्तस
 ॥ मस्तहिमस्तस ॥ विहेस्तकदा
 ॥ कितहालवितहाहे ॥ धिरसभांत
 ॥ रिनिटनिघोनिउविटबसेकव
 ॥ एगहिनपाहे ॥ टालफिरंगविशा
 ॥ छधंनुशरजाळहिचालविदोनि
 ॥ हीबाहे ॥ २८ ॥ वेग्रनृपाळसमग्र
 ॥ संमंतउदग्रदशाननलक्षितसे ॥

(8A)

॥ वंदित सर्वही वंदित से परि नंदि
॥ समान उगाचि बसे ॥ पर्वत सानि
॥ भगवनि धी मग सर्व संसे पणका
॥ य पु से ॥ तो लघु नम्र सखो लस
॥ भापति बोलत बोलत या मृदु से ॥ २५ ॥
॥ श्लोक ॥ याच्या सापेक बापाचु वि
॥ ल गुण जो पुणे राजा ॥ हे कं
॥ न्या त्याच धन ॥ निरविली
॥ साच त्याचि च ॥ उंका लंका
॥ रते कांदशवद ॥ कर के कुमा
॥ सा ॥ लिले चार वेळ राथान पुरति
॥ सुरते च उदोदं उका जा ॥ ईश दंति
॥ म्या देव दंति धरुनि मुरडिला शै
॥ ल कैलास गाढा ॥ घेतां हस्ती प्रह
॥ स्तिक डकडितिकडे कां पतिकाळ
॥ दाढा ॥ तेथें या कां बिठाचा गरिमगु

प्रसन्नोक्तं विप्रयोग

॥ ण किती प्रौटि मा कोण येणे ॥ मा
 ॥ जें गाजो निमो जें ह्या त मज आशा
 ॥ कास या कास घेणे ॥ ३१ ॥ पाहि न
 ॥ डोळ्यां न वरि वराया ॥ आणा ह्येणे
 ॥ रावण रावराया ॥ विदेह बोलै जि
 ॥ एतां पण तो ॥ वरिल ते उपापण
 ॥ आपण ॥ लंका नायक
 ॥ सापक ॥ ती स ज्या वया
 ॥ सज्जला ॥ ता मय कं पिता
 ॥ जनम ॥ वधि मज्जला ॥
 ॥ जाल्या ॥ न सुख मनो रमस
 ॥ रवी तो जो भुजा सावरी ॥ तो उरा
 ॥ कारविकार देखुनि उठे हा का
 ॥ रमा उवरी ॥ ३३ ॥ तो जे व्हांकड
 ॥ कावला धनु वरि ठेला उभा भू
 ॥ तसा ॥ सितेला धडका उठे नि

॥ जमनी किं बोलवे ना तसा ॥ ते बोले
 ॥ पण का सया सिजन के के ला सरव्या
 ॥ नो असा ॥ कै संकारण काय किं कट
 ॥ कटा आतां प्रय लि असा ॥ ३४ ॥ वि
 ॥ रासनिकनक कार्मुक बाण पाणी ॥
 ॥ टें कु नि डाल कर घालुनियां कृपाणी ॥
 ॥ ओ बै सता हि ॥ कळा निधि
 ॥ तो ॥ तो आप ॥ ला गुण वारि
 ॥ धितो ॥ इ पूर् र ॥ जळ धिते मिन
 ॥ दि जाण वादे ॥ तन क काणि गु
 ॥ जवो जाण वादे ॥ उचिते हणु नियांचे
 ॥ वाक्य हि आण वादे ॥ नतर सखिन
 ॥ ठे वि प्राण मी आण वादे ॥ रिधु पया ह
 ॥ णु नि पिया ने घात ला कोण पाया ॥ के
 ॥ वण वधु वरिते कष्मळा कोण पाया ॥
 ॥ सखि हण ति धरिते बुद्धि हितु जसीते ॥

॥ पर ॥ र ॥ छ ॥ वि ॥ र ॥ म ॥ प ॥ र ॥ र ॥ व ॥ क ॥

॥ पुरविल्लपरमात्मारिद्विहितुजसिते ॥ ३५ ॥
 ॥ हाकोणशैवधनुपारखियेरमेला ॥ हा
 ॥ काययोग्यतुजसारखियेरमेला ॥ किं
 ॥ हेमबल्लिसुरधामतरुपमाने ॥ तेआ
 ॥ णिरामजनसंमतरुपमाने ॥ ३६ ॥
 ॥ सौधांगिविबुधांगणाचिवदातिते
 ॥ स्यासग्याव ॥ ॥ तोंतेथेंभुज
 ॥ राजमंडि ॥ नाधनुष्याप्र
 ॥ ती ॥ शशा ॥ शेषकुषणग
 ॥ णिशृंगारित ॥ वलें ॥ दृष्टिकामु
 ॥ करोखिले ॥ नदतेणेहवुलेखि
 ॥ लें ॥ ३९ ॥ हातेंथापटिल्याभुजा
 ॥ मजअसानाहीं ॥ त्रिलोकिंदुजा ॥
 ॥ मेरुहिमजसिखुजासुरनरिंमा
 ॥ क्षिचआधिंपूजा ॥ ऐसंजल्युनि
 ॥ च्यापज्याडउचेलुंजातांनहाले
 ॥ धजा ॥ जेसाशैलमतंगजासिनु

॥ चले पाहे विदेहात्मजा ॥ ४० ॥ ये क्या
 ॥ दोनु चले चिकारु क करे हें ने ठे के जो
 ॥ कळे ॥ लावि हात बळे समग्र हित
 ॥ दांतों कां हिसें पाकळे ॥ मोटि आ
 ॥ रफटि कां नि उचटि दंता वळीचा
 ॥ उनी ॥ अरु दां अति विक्रमं क्षिति
 ॥ तळिं केले ॥ ४१ ॥ विसा
 ॥ करे हि धुं ॥ न सावे रेया
 ॥ स्तव देह डोल ॥ रंतया च्या बहु
 ॥ खाय सोले ॥ ने दे राव एका
 ॥ य बोले ॥ ४२ ॥ म्या मरु पण जितिला
 ॥ उमविले कोदंड चंडाकृती ॥ मद दो
 ॥ दंड उदंड दंड करि ती शाबासि मा
 ॥ झि धृती ॥ डाले बोलत बोलतान
 ॥ धर वे गेला चि सोला मला ॥ उआ
 ॥ ले च्या पआ पापयावरि उरी तो मरु



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com